



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

श्री जीण शक्ति मंदिर, सीकर : आस्था से पर्यटन तक की यात्रा

सुभिता कुमारी

शोधार्थी

इतिहास विभाग

पं दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय, सीकर, राजस्थान (भारत)

सारांश:

राजस्थान के सीकर जिले में स्थित श्री जीण शक्ति मंदिर शक्ति उपासकों, तंत्र साधकों तथा स्थानिय जनजीवन के मध्य अत्यंत लोकप्रिय स्थल है। उपलब्ध साक्ष्यों व ज्ञात इतिहास से स्पष्ट होता है कि यह एक तांत्रिक सिद्ध पीठ है। इस शक्ति मंदिर का निर्माण 10वीं शताब्दी में हुआ था। यह मंदिर माता जीण को समर्पित है, जीण माता आदिशक्ति 'जंयती' का अपभ्रंश माना जाता है जो माँ दुर्गा के नौ स्वरूपों में से एक स्वरूप है। इस शक्ति का उल्लेख भागवत् पुराण के नवे स्कन्द में भी है। जीण माता चौहानों की कुल देवी है तथा पाराशर गोत्र के ब्राह्मण इसके पुजारी हैं। यह मंदिर आस्था, विश्वास एवं शक्ति का प्रतिक होने के साथ-साथ आधुनिक धार्मिक पर्यटन का प्रसिद्ध केन्द्र भी है। यह मंदिर स्थानीय जन-जीवन को आत्मिक संतुष्टि प्रदान करता है तथा पर्यटन सुविधाओं के कारण, इस क्षेत्र के सांस्कृतिक व आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रस्तुत शोध पत्र के द्वारा राजस्थान के सीकर जिले में स्थित श्री जीण शक्ति मंदिर के धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटनात्मक महत्व का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है तथा इसका भी अनुसन्धान किया गया है कि कैसे आस्था, अवसंरचनात्मक विकास तथा प्रशासन मिलकर एक धार्मिक स्थल को वैश्विक पर्यटन मानचित्र पर स्थापित करते हैं।
संकेताक्षर : जीणमाता, शक्ति मंदिर, शेखावाटी, धार्मिक पर्यटन, रोपवे।

प्रस्तावना:

प्रसिद्ध श्री जीण शक्ति मंदिर भारत के राजस्थान राज्य के सीकर जिले के दांतारामगढ़ तहसील के रलावता गाँव में अरावली की तलहटी में तीन छोटी-छोटी पहाड़ीयों के मध्य स्थित है। जो जयपुर से लगभग 112 किलोमीटर तथा सीकर से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर है। यह शक्ति मंदिर भगवती जीण को समर्पित हैं जिनका वास्वविक नाम जयंती देवी था। जो आदिशक्ति माँ दुर्गा का ही एक अवतार है। इस मंदिर में माता की अष्टभुजी प्रतिमा विराजमान है। सभी लोक देवी-देवताओं में जीण माता का लोकगीत सबसे लंबा है जो स्थानिय जन-जीवन में इसकी लोकप्रियता को प्रमाणित करता है। प्राचीनकाल से ही यह स्थल भगतों की अटुट आस्था का केंद्र तथा साधु संतों की तपोस्थली भूमि रहा हैं। मंदिर की दीवारों व विभिन्न भागों पर मिथुन आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं जो इसकी प्राचीनता को प्रमाणित करती हैं। ओसिया व खजुराहों जैसे समकालिन मंदिरों में भी इस प्रकार की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं। श्री जीण शक्ति मंदिर की आस्था से लेकर पर्यटन तक की ऐतिहासिक यात्रा सेकड़ों वर्षों से अधिक समय हुये अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक परिवर्तनों की साक्षी रही है। आज यह जीण शक्ति मंदिर धार्मिक पर्यटन का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया है।



शोध उद्देश्य:

1. श्री जीण शक्ति मंदिर के धार्मिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्त्व का अध्ययन करना।
2. श्री जीण शक्ति मंदिर की स्थापत्य कला का अध्ययन करना एवं अन्य मंदिरों की स्थापत्य कला से साम्यता स्थापित करना।
3. आस्था से पर्यटन केन्द्र तक के विभिन्न चरणों की विकास यात्रा का अध्ययन करना।
4. श्री जीण शक्ति मंदिर का क्षेत्रीय आर्थिक विकास में योगदान का मुल्यांकन करना।

01. श्री जीण शक्ति मंदिर का ऐतिहासिक महत्त्व:

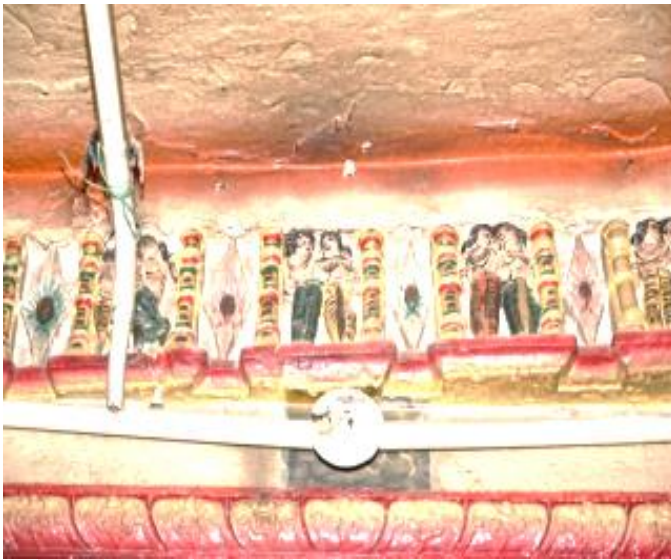
श्री जीण शक्ति मंदिर एक प्राचीन तांत्रिक सिद्धपीठ हैं यहाँ माता की स्वयंभू प्रतिमा (भंवरा वाली माँ) विराजमान है। मंदिर में लगे आठ शिलालेख इसकी प्राचीनता के ठोस प्रमाण हैं। कुछ इतिहासविदों के अनुसार इस मंदिर का निर्माण 8वीं से 9वीं शताब्दी के मध्य में प्रतिहार शासकों के संरक्षण में हुआ था। इतिहासकार डॉ. कैलाश चंद जैन के अनुसार यह मंदिर दसवीं शताब्दी में स्थित था। मंदिर के सामने स्थित एक स्तम्भ पर स्मारक शिलालेख है जिसमें खेमराज नामक योद्धा की अश्वारूढ़ प्रतिमा बनी हुई है। इस योद्धा की मृत्यु 972 ईसवी में हुई थी। अतः यह मंदिर इससे पुराना नहीं हो सकता। मंदिर के मंडप में स्थित स्तम्भ ओसिया मंदिरों से काफी समानता रखते हैं। विभिन्न गवाक्षों में स्थित प्रतिमाएँ भी स्तम्भों जितनी प्राचीन हैं। इस मंदिर का कई बार पुनः निर्माण किया गया है। उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार चौहान शासक पृथ्वीराज प्रथम के शासन काल में हठड द्वारा इस मंदिर का निर्माण करवाया गया था। इस मंदिर से जुड़ी प्रमुख ऐतिहासिक घटना औरंगजेब की हार हैं। औरंगजेब ने जब मंदिर तोड़ने का आदेश दिया तो मुगल सेनिकों द्वारा शेखावाटी क्षेत्र के खंडेला, हर्षनाथ मंदिरों को तोड़ा गया। इसी क्रम में जब इस मंदिर को तोड़ने का प्रयास किया गया तो मंदिर के श्रद्धालुओं ने माता से प्रार्थना की यह कि मंदिर तोड़ने आये मुगल सेना पर माता के भंवरो ने आक्रमण किया था जिससे घबराकर स्वयं औरंगजेब ने माँ के समक्ष माफी मांगी तथा अखण्ड ज्योत के लिए तेल दिल्ली दरबार से भेजने का वचन दिया था और मंदिर में नगाड़ा तथा सोने छत्र भी भेंट स्वरूप प्रदान किया था। जो आज भी मंदिर में विद्यमान है।

02. श्री जीण शक्ति मंदिर की स्थापत्य कला:

श्री जीण शक्ति मंदिर स्थापत्य की नागर शैली में निर्मित हैं यह स्थल शक्ति उपासना का प्रमुख तीर्थ स्थल रहा हैं। इस मंदिर की दीवारों पर तांत्रिक एवं वाममार्गीय प्रतिमाएँ बनी हुई हैं। मंदिर दक्षिणामुखी हैं लेकिन इस का प्रवेशद्वार पूर्वामुखी है। मंदिर परिसर में पुरी साधुओं का मठ भी है तथा मुख्य मंदिर के दक्षिण में पहाड़ की चोटी पर काजल शिखर मंदिर बना हुआ है जहाँ पर जीण ने घोर तपस्या की थी। सभा मण्डप में 24 संगमरमर से बने कलात्मक स्तम्भ लगे हुये हैं। वर्तमान में कुछ स्तम्भों पर चाँदी धातु की पॉलिस की हुई हैं। इन स्तम्भों पर शिलालेख भी अंकित हैं। सभा मण्डप की छत पर गोलाकार ज्यामिति आकृतियाँ, रंगीन मानव आकृतियाँ तथा उभरी हुई नकासी बनी हुई हैं। सभा मण्डप के पूर्व में तल घर में भंवरा वाली माता का मंदिर हैं जिसमें माता की स्वयं भूप्रतिमा एवं जगदेव पंवार का कांस्य धातु से बना सिर विराजमान हैं। जीण के यहाँ आने पूर्व यही शक्तिपीठ था जीण द्वारा जंयती की तपस्या कर ज्योति में विलिन होने के बाद यह श्री जीण शक्ति के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गर्भग्रह में चाँदी की परत से कलात्मक नकासी की हुई हैं गर्भग्रह में माँ जीण की अष्टभुजा युक्त प्रतिमा मध्य वेदी पर विराजमान हैं जिसमें माता को सिंहवाहिनी एवं महिषासुर का संहार करते हुए दर्शाया गया हैं। यह प्रतिमा पत्थर से बनी हुई हैं। आरम्भ में माँ का शराब व पशुबली भेंट की जाती थी परन्तु वर्तमान में वैष्णव परम्परा के अनुसार माता का ध्यान एवं पुजा अर्चना की जाती है।

गर्भग्रह में दो अखण्ड दीपक 24 घण्टे प्रज्वलित रहते हैं। गर्भग्रह पर नागर शैली में शिखर बना हुआ है। मंदिर के विभिन्न भागों में मिथुन प्रतिमाएँ भी उत्कीर्ण हैं जो इस मंदिर की प्राचीनता का प्रमाण हैं। ये प्रतिमाएँ कामकला एवं श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति हैं। इन शिल्पों का उद्देश्य केवल सजावट नहीं है अपितु जीवन के चारपुरुषार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) को दर्शाना हैं। गर्भग्रह बाहरी दीवार पर (प्रदक्षिणा पथ) में अनेक देवी-देवताओं की प्रतिमाएँ उत्कीर्ण हैं जिन्हें लाल सिंदूर से रंगा हुआ हैं। मंदिर परिसर में बटुक भैरव मंदिर भी हैं।

श्री जीण शक्ति मंदिर की स्थापत्य कला



03. श्री जीण माता का आविर्भाव और लोकमान्यताएँ:

श्री जीण माता माँ दुर्गा का स्वरूप हैं लोक मान्यता हैं कि इन का जन्म चौहान शासक गंग के घर पर हुआ था। किसी पारिवारिक विवाद के कारण जीण अपने भाई हर्ष से रूठ कर अरावली के काजल शिखर पर माँ जयंती की तपस्या करने लगी इस दौरान, उन के भाई हर्ष उनको मनाने के लिए भी आये परंतु, जीण ने घर जाने से माना कर दिया। तत्पश्चात् हर्ष भी अरावली पर्वत के शिखर पर तपस्या करने लगे जहाँ वर्तमान में हर्षनाथ भैरव मंदिर स्थित हैं। जीण कठोर तपस्या के परिणाम स्वरूप अपनी दिव्य शक्ति से माँ जयंती में विलिन हो गई तथा जीण भवानी नाम से प्रसिद्ध हुई। जहाँ जयंती की स्वयंभू प्रतिमा थी वहाँ इन का मुख्य मंदिर बनाया गया तथा इससे लगभग 14 किलोमीटर दूर हर्ष पर्वत की चोटी पर हर्ष (भैरव स्वरूप) का मंदिर बनाया गया। ये दोनों दिव्य मंदिर शक्ति व शिव के अलावा भाई बहन -पवित्र रिश्ते की झलक भी प्रस्तुत करते हैं

04. श्री जीण शक्ति मंदिर का सांस्कृतिक महत्त्व:

भारतीय संस्कृति का मूल आधार साम्प्रदायिक सदभाव एवं धार्मिक सहिष्णुता है। इसी समृद्ध संस्कृति का ही सुपरिणाम है कि शेखावाटी क्षेत्र मंदिर स्थापत्य का धनी रहा है। श्री जीण शक्ति मंदिर राजस्थानी संस्कृतिक का लोक दर्पण हैं। मेले, त्यौहार, उत्सव, लोकगीत, लोकनृत्य आदि संस्कृति के महत्वपूर्ण घटक हैं। इसकी ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि में देवी से संबंधित कथाओं में देवी के जन्म, तपस्या, चमत्कारों से संबंधित लोकगाथा एवं हर्ष व जीण के बीच का प्रसंग व संवाद का संजीव विवरण मिलता है। इन कथाओं को चारण व भाट एवं पुजारीयों द्वारा संरक्षित रखा जाता है तथा पीढ़ी दर पीढ़ी श्रद्धालुओं को सुनाई जाती हैं। लोकनृत्य की बात करें तो मंदिर के अनेक उत्सव व नवरात्रों में लोक नृत्य की झलक देखी जाती हैं। जिसमें स्थानीय महिलाएँ देवी की महिमा का गुणगान करते हुए पारम्परिक लोकनृत्य जैसे- घुमर नृत्य, डांडिया नृत्य कर सम्पूर्ण वातावरण को लोकसंस्कृति के सरगम से भर देती हैं जिससे पारम्परिक लोक संस्कृतिक संजीव होकर पीढ़ी दर पीढ़ी तक संचारित होती रहती हैं।

जीण माता शेखावाटी क्षेत्र की प्रतिष्ठित कुल देवी मानी जाती हैं। इसे देवस्थान विभाग, राजस्थान द्वारा अधिकारिक मान्यता प्राप्त है। चौहानों की कुल देवी के साथ - साथ यह स्थानिय श्रद्धालुओं की आराध्य देवी भी हैं। सभी जाति धर्म, वर्ग के लोग पीढ़ियों से माता में अटुट विश्वास रखते आये हैं शेखावाटी की संस्कृति में जीण का महत्वपूर्ण स्थान है। लोकगीतों और कथाओं में इनके चमत्कार वात्सल्य का उल्लेख मिलता है। राजस्थान के सभी लोक देवताओं में माँ जीण का लोकगीत सबसे लम्बा है (जिसे कनफटे जोगी द्वारा गाया जाता है।) जो स्थानीय जन जीवन में माता की लोकप्रियता को दर्शाता है। नवरात्र के समय लगने वाले मेले, लोकगीत, लोकनृत्य, लोककथाओं के माध्यम से लोकपरम्पराओं व लोककलाओं को संरक्षण होता है। मेले तथा यहाँ होने वाले विभिन्न उत्सवों में स्थानीय संस्कृति, पारम्परिक वेशभूषा, रितिरिवाज, शिल्पकला तथा हस्तशिल्प की प्रदर्शनी लगाई जाती है। इस प्रकार यह स्थल राजस्थान की सांस्कृतिक धरोहर के जीवित केंद्र हैं।

05 श्री जीण शक्ति मंदिर : आस्था का केंद्र व स्थानीय जन-जीवन से जुड़ाव

श्री जीण शक्ति मंदिर प्राचीनकाल से ही स्थानीय लोगों की आस्था का प्रमुख केंद्र रहा है। स्थानीय लोग प्रत्येक शुभ कार्य जैसे - विवाह, जन्मोत्सव, गृहप्रवेश आदि से पूर्व माँ के मंदिर में आकर पुजा आराधना करते हैं। नवरात्रों के समय यहाँ भजन कीर्तन जागरण व मेलों का आयोजन होता है। इस समय स्थानिय निवासियों के अलावा देश के विभिन्न भागों (कलकत्ता, दिल्ली, हरियाणा, सुरत, मुम्बई) से लाखों की संख्या में भक्त माता के दर्शन हेतु आते हैं। आश्विन नवरात्र अष्टमी 2025 को एक लाख से अधिक श्रद्धालु माता के दर्शन हेतु मंदिर पहुँचे थे। यहाँ श्रद्धालु दल बनाकर रात्री जागरण करते हैं इसके अतिरिक्त स्थानीय भजन गायकों के साथ दूर - दूर से आई कीर्तिन मंडलिया मंजीरा, हारमोनियम ढोलक की ताल पर माँ की महिमा का गुणगान करते हैं। जिससे सामुहिक ज्ञान व आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है। जो उनकी सामुहिक भक्ति को प्रगाढ़ करता है एवं आपस में एक - दुसरे को जोड़ते हैं। अधिकांश श्रद्धालु अपनी मनोकामना पूर्ण होने पर स्वामणी, कलश, चवर-छत्र आदि भेंट स्वरूप मंदिर में चढ़ाते हैं। यह मंदिर विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग समुदाय के आस्था के केन्द्र के साथ - साथ सामाजिक समरसता का सेतु भी है। समस्त स्थानीय लोग बिना किसी जातिगत भेदभाव के मंदिर के समुचित देख रेख के साथ - साथ मेलों की व्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। जिससे मंदिर की साफ - सफाई, जल आपूर्ति, रोशनी, भक्तों के लिए सुविधाजनक दर्शन, भण्डारा आदि का सफल संचालन स्थानीय प्रशासन व मंदिर ट्रस्ट समिति द्वारा किया गया जाता है। इसके अलावा स्थानीय युवा व स्वयं सेवी संस्थाये अन्य व्यवस्था जैसे यातायात नियंत्रण, चिकित्सा, सूचना आदि में सहयोग करती हैं। ये सभी प्रयास मंदिर को स्थानीय जन-जीवन से घनिष्ठ रूप से जोड़ते हैं। यह मंदिर स्थानीय लोगों को एक

ऐसा मंच प्रदान करता हैं जहाँ सामुहिक आस्था लोगो समाजिक एकता की डोर में बांधती हैं। जिसके परिणाम स्वरूप सर्वधर्म सम्भाव तथा सामुहिक सहयोग को प्रोत्साहन मिलता हैं।

माता जीण स्त्री शक्ति का स्वरूप हैं जिसकी पुजा आराधना समाज में महिला सशक्ति करण तथा मातृशक्ति के सम्मान तथा सांस्कृतिक पहचान का आदर्श प्रस्तुत करता हैं। इस प्रकार यह शक्ति मंदिर स्थानीय लोगो में सामाजिक समरसता, लोकपरम्परा एवं सांस्कृतिक मूल्यों को समझने एवं संरक्षण में सक्रिय भूमिका निभाता है।



06. श्री जीण शक्ति मंदिर का मंदिर का आर्थिक महत्व : स्थानीय व्यापार, रोजगार व मेलों

जीण शक्ति मंदिर में वर्ष में दो बार, नवरात्रों के समय (चैत्र व आश्विन) मेंलो का आयोजन होता हैं। नवरात्रों के समय लगने वाले मेलें लक्ष्मी मेलों के नाम से जाना जाते हैं। क्योंकि इन मेलों में लाखों की संख्या में धार्मिक पर्यटक आते हैं। इन मेलों का स्थानीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मेलों के समय मंदिर परिसर में अस्थाई दुकानें व स्टॉल लगभग सैकड़ों की संख्या में लगती हैं इन स्टॉलों में प्रसाद, पुजन सामग्री, हस्तशिल्प, खिलौनें भोजन पानी आदि की बिक्री होती है। जिससे स्थानीय दुकानदारों को सबसे अधिक आमदनी होती है। मेलों के समय मंदिर के आस-पास बहुत अधिक चहल-पहल तथा रोक-रहती हैं। श्रद्धालुओं की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हुए इन मेंलो में लाखों रूपयें का व्यापार होता हैं जो इस क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को सम्बल प्रदान करता हैं। इसके अतिरिक्त मंदिर ट्रस्टियों द्वारा भी मेलों के समय स्ट्रॉल व ढाबें हेतु अस्थाई जगह आवंटित की जाती है। जिससे ट्रस्ट को शुल्क के रूप में आय प्राप्त होती हैं इसका उपयोग मंदिर के रख रखाव हेतु किया जाता है।

मेलों के समय मंदिर परिसर में स्थित धर्मशालाओं तथा आस-पास के क्षेत्र में स्थित निजी धर्मशालाओं में अनेक श्रद्धालु ठहरते हैं। जिनके संचालन हेतु स्थानीय लोगों को रोजगार मिलता हैं तथा स्थानीय क्षेत्र के लोगो की आय में भी वृद्धि होती हैं। नवरात्रों के समय परिवहन क्षेत्र भी प्रभावित होता हैं श्रद्धालुओं को मंदिर तक पहुँचने के लिए टेक्सी, बसे, जीपे इत्यादि सुविधाएं प्रदान की जाती हैं। जिससे स्थानीय वाहन चालकों को लाभ होता हैं। मेलों के समय परिवहन सेवाओं, पार्किंग व गाइड के रूप में अतिरिक्त रोजगार स्थानीय लोगों को मिलता। जैसे पार्किंग व्यवस्था बनाये रखने के लिए पार्किंग अनुचर लगाये जाते हैं तथा श्रद्धालुओं को माता की जीवन गाथा, इतिहास, लोक मान्यता आदि की सम्पूर्ण जानकारी देने हेतु गाइड सेवा प्रदान की जाती हैं और साथ ही यह पर्यटक परम्परागत हस्तशिल्प का समर्थन करके शेखावाटी की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, स्थानीय जन-जीवन को सशक्त करने तथा स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। निष्कर्षतः मेलों के समय स्थानीय लोगों को सर्वाधिक रोजगार व आय प्राप्त होती हैं।

07. धार्मिक पर्यटन व अवसंरचनात्मक विकास:

राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र में स्थित श्री जीण शक्ति मंदिर को प्रमुख धार्मिक पर्यटन स्थल का दर्जा प्राप्त है। यह मंदिर शेखावाटी क्षेत्र के प्रसिद्ध स्थल जैसे सकराय माता , ,खाटूश्यामजी ,हर्ष ,सालासर ,लोहार्गल नवलगढ़ ,फतेहपुर,मंडवाआदि के साथ एक धार्मिक पर्यटन परिपथ का भाग बन गया है। नवरात्रों के समय जीण माता मंदिर परिसर में विशेष प्रकार की सजावट व झाकियाँ सजाई जाती है। इस समय लाखों की संख्या में



Source- Rajasthan Tourism Website

श्रद्धालु आते हैं। अष्टमी व नवमी के दिन पारम्परिक रीति से माता को धोक व कन्या पूजन किया जाता है। चैत्र नवरात्र की अष्टमी को 'बत्तीसी संघ' नामक संघ द्वारा माता को बत्तीस मीटर लम्बी चूनड़ी भेंट की जाती है इस समय प्रशासन द्वारा शराब, डीजे आदि पर रोक लगाई जाती है। पर्यटकों को अनुकूल अनुभव मिलता है, बाहरी पर्यटक प्रशासन की सराहना करते हैं। मंदिर प्रशासन व स्थानीय मीडिया की सूचनाओं के अनुसार नवरात्रों के समय लगभग एक लाख धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटक पहुँचते हैं। देशी पर्यटक अपने



पुत्र-पुत्रियों के विवाह के बाद गठजोड़े की जात लगाने माता के दरबार पहुँचते हैं तथा मंदिर में जडुला संस्कार व विभिन्न प्रकार के अन्य संस्कार करवाये जाते हैं। प्रशासन द्वारा मंदिर परिसर में लगे मेडिकल पॉइंटों का समय-समय पर निरीक्षण कर मौसमी बिमारीयों को लेकर पर्यटकों को जागरूक करने के लिए निर्देशित किया जाता है। राजस्थान में 2024 में घरेलू पर्यटक विजिट्स की संख्या में सीकर जिला शीर्ष पर्यटन स्थल रहा है। जिसमें श्री जीण शक्ति मंदिर एवं खाटूश्याम जी मंदिर की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

रोपवे परियोजना:

शेखावाटी क्षेत्र का पहला यात्री रोपवे जीण माता मंदिर के काजल शिखर मार्ग पर आरम्भ किया गया है। ये रोपवे लगभग 500 मीटर लम्बा है जो लगभग 8 करोड़ रुपये की लागत से तैयार किया गया है। इस रोपवे के कारण श्रद्धालुओं के लिए सीढ़ियों की चढ़ाई अब लगभग 4 मिनट में संभव हो पाई है। इस रोपवे में 6 ट्रॉलीयों की सुविधा है एक ट्रॉली में 6 लोग एक साथ बैठकर जा सकते हैं इस प्रकार इस रोपवे से 36 यात्री एक साथ आवागमन कर सकते हैं। इसके माध्यम से वर्तमान में पहाड़ी की चोटी पर स्थित काजल शिखर मंदिर में हजारों की संख्या में पर्यटक पहुँच रहे हैं। इस रोपवे के कारण वरिष्ठ या दिव्यांग श्रद्धालुओं की पहुँच, भीड़ प्रबन्धन तथा पर्यटकों के यात्रा अनुभव में भी सुधार आया है जिसके कारण धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिला है।

08. पर्यटन विभाग व प्रशासन की योजनाएँ:

राजस्थान सरकार और पर्यटन विभाग ने जीण शक्ति धाम को पर्यटन परिपथ के रूप में विकसित करने के लिए हाल ही के वर्षों में अनेक पहलें की हैं। राजस्थान पर्यटन विभाग ने इस शक्ति धाम को हेरिटेज लुक प्रदान करने की महत्वाकांक्षी योजना प्रारम्भ की है, वर्ष 2025 की घोषित इस योजना के अंतर्गत विकास कार्यों को चरणबद्ध करने की मंजूरी प्रदान की गई। जिसका लक्ष्य मंदिर परिसर को सांस्कृतिक स्वरूप में विकसित करना तथा भक्तों के अनुभव को अच्छा बनाना है। प्रथम चरण में लगभग 1.17 करोड़ रुपये की लागत से मुख्य प्रवेश द्वार तथा मंदिर परिसर के ढाँचे का सौन्दर्यकरण किया जाना है। मंदिर परिसर के अन्य द्वारों का जीर्णोद्धार कर इन्हें पारम्परिक कलाकृतियों से सजाया जायेगा और पधारों म्हारे देश की थीम पर प्रवेश द्वार से मंदिर तक जाने के मार्ग को विकसित किया जायेगा। इसके साथ ही मंदिर मार्ग की सड़क निर्मित की जायेगी। भक्तों की सुविधाओं के लिए पेजल व्यवस्था, सुलभ शौचालय तथा छायादार विश्राम स्थल इत्यादि सुविधाओं को ओर विकसित करना प्रस्तावित है।

द्वितीय चरण में पर्यटन विभाग के द्वारा मंदिर परिसर के पास धर्मशाला तथा विस्तृत पार्किंग व्यवस्था विकसित करने की योजना हैं, इन सुविधाओं हेतु 3.18 करोड़ का प्रोजेक्ट स्वीकृति हेतु भेजा गया हैं। यदि यह प्रोजेक्ट स्वीकृत हो जाता है तो भविष्य में पर्यटकों को विश्राम गृह, सूचना केंद्र, कैफेटेरियां व पार्किंग जैसी आधुनिक सुविधाएं मिलेगी। इसके अलावा राजस्थान देव स्थान विभाग द्वारा भी मंदिर के प्रचार- प्रसार व संरक्षण हेतु कदम उठाये जा रहे हैं। इस विभाग की अधिकारिक सूची में जीण शक्ति धाम महत्वपूर्ण तीर्थ के रूप में शामिल हैं। इस विभाग द्वारा समय - समय पर सुरक्षाकर्मी तथा अनुदान के रूप में सहयोग प्रदान किया जाता हैं। पर्यटन विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा जीण शक्ति मंदिर का प्रचार - प्रसार करना आरम्भ किया हैं। राजस्थान के पर्यटन विभाग की वेबसाइट एवं सोशल मिडिया पर जीण माता की जानकारी, चित्र, मार्गदर्शिका आदि प्रसारित हो रहे हैं। जिससे देश भर के श्रद्धालु एवं युवा पीढ़ी इस धार्मिक स्थल के प्रति आकर्षित हो रहे हैं। स्थानीय प्रशासन द्वारा मंदिर में मुक्त वाई-फाई, हॉटस्पॉट, डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर सूचनाएं प्रकाशित करने आदि प्रयोग भी विचाराधीन हैं, ताकि पर्यटक आधुनिक सुविधाओं का लाभ उठा सकें। यद्यपि जीण शक्ति मंदिर को शेखावाटी क्षेत्र का प्रमुख पर्यटक क्षेत्र बनाने में अनेक चुनौतियाँ और समस्याएँ भी हैं, जैसे: संवेदनशील पहाड़ी क्षेत्र में ध्वनि प्रदूषण व स्वच्छता की समस्या, पर्यावरण प्रदूषण, भीड़ प्रबन्धन तथा प्रशासन व पूजारियों के मध्य विवाद के चलते मंदिर 2025 अस्थाई रूप में बंद हुआ था। अतः इन समस्याओं और चुनौतियों के समाधान के लिये प्रशासन एवं धार्मिक संस्थानों के बीच सतत संवाद नितान्त आवश्यक हैं।

09. भविष्य की संभावनाएं एवं सुझाव:

वर्तमान में अवसंरचनात्मक प्रगति को देखते हुए इस मंदिर के भविष्य को लेकर कई सकारात्मक संभावनाएं देखने को मिलती हैं प्रशासनिक सहयोग से मंदिर आधारभूत संरचना के विकास के बाद संभावना है कि पर्यटकों की संख्या में बढ़ोत्तरी होगी जिस कारण से स्थानीय लोगों की आय में दीर्घकालीन वृद्धि होगी। जिसका एक उदाहरण रोपवे परियोजना हैं रोपवे परियोजना से धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिल रहा हैं।

1. भविष्य में यदि इसी प्रकार के अन्य सुधार जैसे पेराग्लाईडिंग, हॉटएयर बैलुनिंग जैसी गतिविधियाँ जोड़ी जाती है तो यह क्षेत्र एडवेंचर ट्युरिज्म का प्रमुख केन्द्र बन सकेगा।
2. भविष्य में पर्यटकों की बढ़ती संख्या तथा उनकी सुरक्षा हेतु फायरसेफ्टी, आपातकालीन चिकित्सा सुविधा एवं आपदा निकासी योजना मजबूत करनी होगी। क्योंकि पर्यटकों की सुरक्षा सर्वोपरी होती है इसके लिए मानव संसाधन, तकनीकी तथा सामुदायिक सहयोग तीनों का सामंजस्य होना नितान्त आवश्यक है।
3. मंदिर की पारम्परिक स्थापत्यकला को बनाये रखते हुए कलात्मक तत्वों के संरक्षण (भित्तिचित्र व मुर्तिशिल्प) हेतु केमिकल प्रिजर्वेशन उपाय किये जा सकते हैं। जिससे सांस्कृतिक संरक्षण के साथ आर्थिक विकास का सामंजस्य स्थापित हो सके।
4. यदि सरकार के द्वारा प्रस्तावित सांस्कृतिक व्याख्यान केंद्र की स्थापना की जाती है तो पर्यटक मंदिर के इतिहास और लोक सांस्कृतिक को गहराई से समझ सकेंगे। इसी प्रकार यदि जीण शक्ति मंदिर परिसर में शेखावाटी सांस्कृतिक संग्रहालय स्थापित किया जाये तो पर्यटकों को धार्मिक अनुभव के साथ -साथ शैक्षणिक अनुभव भी प्राप्त होंगे।
5. श्रद्धालुओं के ठहरने हेतु आवास सुविधा सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय लोगों को प्रेरित करना होगा, ताकि वे आस-पास हॉमस्टे, साफ सुथरे लॉज इत्यादि व्यवस्था आरम्भ करें। जिससे नवरात्री के समय सभी श्रद्धालुओं को ठहरने के लिए सुविधाजनक स्थान मिल सकें। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं उत्सवों को प्रोत्साहित किया जाये तो इन धार्मिक सांस्कृतिक परम्पराओं का सतत संचरण युवा पीढ़ी में हो सकेगा।
6. भविष्य में डिजिटलीकरण के माध्यम से डिजिटल कनेक्टिविटी व पर्यटक संतुष्टि को नई ऊँचाईयों पर ले जा सकते हैं। मिडिया के द्वारा जीण शक्ति मंदिर का अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक प्रचार - प्रसार संभव हैं जिससे ऑनलाइन आरती प्रसारण, वर्चुअल टूर एवं ई-दान जैसी सुविधाओं से वैश्विक स्तर के श्रद्धालु समुदाय को भी जोड़ा जा सकता हैं। जिससे वैश्विक स्तर पर मंदिर के प्रति जागरूकता बढ़ेगी तथा स्थानीय क्षेत्र की आय में वृद्धि होगी। इनके साथ ही यदि स्थानीय लोगो को भाषा अनुवादक, पर्यटक उद्यमी के रूप में प्रशिक्षित किया जाये तो रोजगार के नये अवसर खुलेंगे। इस सुझावों के लागू होने पर मंदिर केवल आस्था का केन्द्र ही नहीं अपितु स्थानीय क्षेत्र के विकास व पहचान का केंद्र भी बन सकता हैं।

निष्कर्ष :

जीण शक्ति मंदिर, सीकर का आस्था से पर्यटन तक का सफर एक प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र का प्राचीन शक्ति मंदिर समय के साथ आधुनिक परिप्रेक्ष्य में नयी भूमिका निभा सकता है। हजारों वर्ष पुरानी पौराणीक व ऐतिहासिक विरासत से परिपूर्ण इस मंदिर ने स्थानीय जनजीवन में अटुट आस्था को जन्म दिया है। वर्तमान में यही आस्था व्यापक स्तर पर धार्मिक पर्यटन का स्वरूप लेकर इस क्षेत्र के आर्थिक व सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह कर रही है। इस मंदिर की स्थापना ऐतिहासिक दृष्टि से चौहान शासको की श्रद्धा थी एवं वर्तमान में यह सांस्कृतिक दृष्टि से लोकपरम्पराओं, लोककथाओं, लोकगीतों का केन्द्र है। वर्तमान समय में इस मंदिर को संगठित प्रबन्धन एवं प्रशासन के सहयोग तथा स्थानीय सहभागिता के माध्यम से एक सुव्यवस्थित धार्मिक पर्यटन स्थल का स्वरूप दिया गया है। जीण शक्ति मंदिर दर्शाता है कि यदि प्राचीन धार्मिक स्थलों को आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित किया जाये तो न केवल आध्यात्मिक संतुष्टि मिलती है अपितु सुनियोजित पर्यटन इसके जीवित स्वरूप को संरक्षित व संवर्धित करता है। जिसके परिणामस्वरूप यह स्थल सांस्कृतिक शिक्षा, सामुदायिक उन्नति तथा आर्थिक प्रगति का केन्द्र बन जाते हैं। आस्था से पर्यटन तक की यात्रा से स्पष्ट होता है कि आस्था व पर्यटन परस्पर विरोधी नहीं है अपितु एक दूसरे के पूरक हैं। आस्था ने इसे तीर्थ स्वरूप या जीवन्त स्वरूप प्रदान किया है वहीं पर्यटन ने इस के जीवित स्वरूप को संरक्षित व संवर्धित किया है। इस प्रकार आस्था से पर्यटन तक का यह सफर भविष्य में अन्य धार्मिक स्थलों के विकास के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगा।

संदर्भ सूची :

1. मनोहर, राघवेन्द्र सिंह, (2010), राजस्थान के प्रमुख शक्तिपीठ, जयपुर, पंचशील प्रकाशन, 28-29
2. राजस्थान पत्रिका, सीकर संस्करण, 01 अक्टूबर 2025
3. शेखावाटी टुरिज्म, राजस्थान सरकार https://devasthan.rajasthan.gov.in/DPR_Reports
4. मेहता, अमित, (2022) शेखावाटी का इतिहास व स्थापत्य, जयपुर, यूनिक ट्रेडर्स, 30-32
5. टी.एस. प्रकाश, (1993), शेखावाटी वैभव, शिमला, शेखावाटी इतिहास शोध संस्थान, 50-53
6. शेखावत, सुरजन सिंह, (1989), शेखावाटी प्रदेश का प्राचीन इतिहास, झुंझुनू, सुरजन सिंह शेखावत मेमोरियल संस्थान, 80-82
7. मिश्र, रत्नलाल, (1998), शेखावाटी का नवीन इतिहास, झुंझुनू, सुरजन सिंह शेखावत मेमोरियल संस्थान, 53
8. सिंह, शत्रुजीत, (2023) शेखावाटी का धार्मिक जीवन (एक ऐतिहासिक अध्ययन), बिलासपुर, शाश्वत पब्लिकेशन, 130-132
9. Finance Department, Rajasthan Budget 2024-2025
10. Rajasthan District Gazetteers: Sikar 1978